

# डॉ. टिम गोम्बिस , गलातियों, सत्र 4, गलातियों 2:11-21

© 2024 टिम गोम्बिस और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. टिम गोम्बिस द्वारा गलातियों की पुस्तक पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह गलातियों 2:11-21 पर सत्र संख्या चार है।

तो, यह गलातियों में चौथा व्याख्यान है, और इस व्याख्यान में, हम गलातियों 2:11 से 21 तक को कवर करने जा रहे हैं।

सबसे पहले, 11 से 14 आयतों में पौलुस ने अन्ताकिया में पतरस के साथ अपने टकराव का वर्णन किया है, और फिर 15 से 21 आयतों में पौलुस ने सुसमाचार के गहरे तर्क को खोजा है। मूल रूप से, अन्ताकिया में पतरस के साथ उसका तर्क यही है, और यह वास्तव में उस तर्क का निर्माण करता है जो वह गलातिया में यहूदी ईसाइयों और गलातिया में मौजूद पूरे श्रोताओं के साथ बहस करना चाहता है। यहाँ पौलुस जो कर रहा है वह यह है कि वह दो स्थितियों को एक साथ ला रहा है, यानी अन्ताकिया में पतरस का टकराव, और वह मूल रूप से गलातिया में मौजूद अपने पूरे श्रोताओं के टकराव के सार के रूप में इसका उपयोग कर रहा है। तो पतरस के साथ वह स्थिति, मूल रूप से, वह दो स्थितियों को मिला रहा है क्योंकि वे एक ही चीज़ हैं।

अब, इस बात का एक व्याख्यात्मक मुद्दा है कि क्या पद 15 से 21 वास्तव में उस भाषण का हिस्सा थे जो उसने अन्ताकिया में पतरस को दिया था, जो उसके टकराव का हिस्सा है। शायद यह था। मेरा मतलब है, यह शायद कुछ ऐसा है जो उसने अन्ताकिया में वहाँ कहा था, लेकिन वास्तव में यह हमारे उद्देश्यों के लिए मायने नहीं रखता क्योंकि पॉल जो कर रहा है वह यह है कि वह यहूदी ईसाइयों, पॉल के समकालीनों, के धर्मशास्त्रीय या धार्मिक तर्क को उजागर कर रहा है, जिन्हें सुसमाचार के बारे में समझने की आवश्यकता है ताकि वे यीशु में ईश्वर के एक नए बहु-जातीय परिवार की संगति की पूर्णता में भाग ले सकें। तो आइए गहराई से देखें और देखें कि यहाँ क्या होता है, पॉल के तर्क की प्रकृति क्या है।

पद 11, पद 11 से 14 में, पॉल ने पतरस के साथ अपने टकराव का वर्णन किया है और वह पद 11 में कहता है, जब कैफा, और यह पतरस है, यह उसका अरामी नाम है, लेकिन जब कैफा अन्ताकिया आया, तो मैंने उसके सामने उसका विरोध किया क्योंकि वह दोषी ठहराया गया था। अब यह प्रेरितों के काम में दर्ज नहीं है, पतरस की अन्ताकिया की यह यात्रा, और मुझे नहीं पता कि पतरस अन्ताकिया क्यों गया। यह जरूरी नहीं था कि मैं आपकी जाँच करने जा रहा हूँ और देखूँगा कि आप सब कुछ ठीक कर रहे हैं, एक तरह की यात्रा, लेकिन पॉल उस पर टिप्पणी नहीं करता है।

तो, पतरस अन्ताकिया में पहुँचता है, और आपको याद होगा कि अन्ताकिया का चर्च एक मिश्रित जाति का चर्च है। वहाँ यहूदी और गैर-यहूदी मसीह में एक साथ संगति करते हैं क्योंकि वे एक साथ अपनी ईसाई पहचान का आनंद ले रहे हैं। यरूशलेम का चर्च पूरी तरह से एकरस था।

यह यहूदी था। ये यहूदी ईसाई हैं, और इस वजह से, यरूशलेम चर्च में सभी ईसाइयों को ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी; उन्हें सुसमाचार के तर्क के ज़रिए काम करने की ज़रूरत नहीं थी, जो उन्हें गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ संगति करने के लिए प्रेरित करता। उनके पास बस अवसर नहीं था।

वे सभी यहूदी हैं जो ईसाई हैं। पतरस के पास वह अवसर था क्योंकि उसे प्रेरितों के काम 11 में कैसरिया में सूबेदार से मिलने के लिए भेजा गया था। इसलिए, पतरस को इस मुद्दे पर काम करना पड़ा, लेकिन यह भी मामला है कि कुछ अर्थों में आप कुछ धार्मिक रूप से सीख सकते हैं, लेकिन चूंकि आप पर इसे व्यावहारिक रूप से अपनाने के लिए दबाव नहीं डाला जाता है, इसलिए कभी-कभी वह धार्मिक पाठ हमेशा बहुत गहराई से अंतर्निहित नहीं होता है।

इसलिए, पतरस अन्ताकिया की यात्रा करता है, और पौलुस उसका विरोध करता है क्योंकि वह न्याय के स्थान पर खड़ा है। वह दोषी ठहराया गया है। अच्छा, वह दोषी क्यों ठहराया गया? पतरस ने क्या किया? अच्छा, पौलुस यहाँ पद 12 में बताता है कि सबसे पहले, वह अन्यजातियों के साथ भोजन कर रहा था।

इसका मतलब यह है कि जब चर्च इकट्ठा हुआ, तो पतरस वही कर रहा था जो वे एंटीओचियन चर्च में करते थे। यानी, वे प्रभु के भोज या प्रेम भोज के लिए इकट्ठे हुए, एक चर्च के रूप में बैठक जहाँ वे एक साथ भोजन करते थे, और यहूदी, यहूदी ईसाई और गैर-यहूदी ईसाई सभी एक ही मेज पर भोजन कर रहे थे। वे एक साथ भोजन कर रहे हैं।

अब, यह अज्ञात है कि यहूदियों के पास कोषेर भोजन होता था या नहीं। मेरी राय में, यह संभावना है कि यहूदियों ने कोषेर भोजन खाया होगा, उनके लिए विशेष रूप से तैयार किया गया भोजन। गैर-यहूदी ईसाई जो कुछ भी खाने जा रहे थे, उसे खा लेते थे।

लेकिन जो बात महत्वपूर्ण थी वह यह थी कि वे एक साथ मेज़ पर बैठे, जो कि यहूदी ईसाइयों की विरासत में मिली इस धारणा से परे एक क्रांतिकारी कदम था कि क्या उचित है। पीटर ने एक संदर्भ दिया है। मैंने यहाँ इस अंश को नहीं लिखा, लेकिन यह अधिनियम 11 में सेंचुरियन को दिए गए उनके भाषण में है जब उन्होंने कहा, आप जानते हैं कि यहूदियों के लिए अन्यजातियों के साथ खाना खाना गैरकानूनी है। इसलिए, यह कानून में नहीं है जिसे टोरा माना जाता है कि उन्हें वास्तव में अन्यजातियों के साथ बैठकर खाने से रोका गया था।

इसलिए, जो उन्हें गैरकानूनी लगता था, अन्ताकिया में ये यहूदी ईसाई उससे आगे बढ़कर यीशु के एक नए परिवार के हिस्से के रूप में अपनी ईसाई पहचान की पूर्णता में जीने के लिए दबाव डाल रहे हैं। इसलिए, पतरस उस संगति का आनंद ले रहा है। उसने कुछ समय के लिए गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ खाया, लेकिन याकूब के कुछ लोग आए, और जब वे आए, तो वह खतना करने वालों के समूह से डरकर खुद को अलग-थलग करने लगा।

कहने का तात्पर्य यह है कि ये लोग यरूशलेम से नीचे आते हैं, और ये यहूदी ईसाई हैं जो मूल रूप से अन्यजातियों के साथ संगति करना गैरकानूनी मानते हैं, या तो किसी अन्यजाति के घर में

जाते हैं या अन्यजातियों के साथ बैठकर खाना खाते हैं। और जब वे नीचे आते हैं, तो पतरस, क्योंकि वह भयभीत हो जाता है, खुद को अन्यजातियों के साथ संगति करने से दूर करना शुरू कर देता है, अब उनके साथ खाना नहीं खाता, मूल रूप से इन लोगों के प्रति उनकी अस्वीकृति के डर से जो यरूशलेम चर्च से हैं। खैर, पतरस की कार्रवाई का प्रभाव गैर-यहूदी ईसाइयों को यह संदेश देना है कि आपको हमारे जैसा बनना होगा। यहूदी होना भगवान की स्वीकृत जातीय पहचान का हिस्सा होना है, और क्योंकि आप पापी हैं, आप उसी समूह के नहीं हैं जिसका मैं हिस्सा हूँ, आपको बदलना होगा और मेरे जैसा बनना होगा अन्यथा मैं आपके साथ संगति नहीं कर सकता।

तो, यह एक संकेत है कि सामाजिक व्यवहारों का धार्मिक अर्थ है। यह बहुत हद तक एक जैसी बात है, लेकिन 1 कुरिन्थियों 11 में भी यही बुनियादी जोर दिया गया है, जब अमीर लोग कुरिन्थ में प्रेम भोज से गरीबों को बाहर कर रहे हैं, और पॉल उनसे कहता है कि जब वे गरीबों को बाहर करके उन्हें शर्मिंदा करते हैं तो वे ईसाई पहचान और ईसाई सामाजिक समुदाय को सही तरीके से नहीं अपना रहे हैं। क्योंकि अंतर्निहित संदेश यह है कि आप पर्याप्त अच्छे नहीं हैं, हमारे पास आपसे अधिक सामाजिक मूल्य है, जिसका अर्थ है कि हमारे पास भगवान के सामने आपसे अधिक अंतर्निहित मूल्य है।

यहाँ भी पतरस के कृत्य के साथ यही हो रहा है। पौलुस कहता है कि यह पतरस की ओर से पाखंड का कार्य है। आयत 13, और बाकी यहूदी भी उसके साथ पाखंड में शामिल हो गए, जिसके परिणामस्वरूप बरनबास भी उनके पाखंड में बह गया, जो दिलचस्प है कि पौलुस इसे पाखंड कहता है।

यह पाखंड क्यों है? वह इस पर टिप्पणी नहीं करता, लेकिन यह बहुत अच्छी तरह से तथ्य हो सकता है कि बरनबास पहले से ही बेहतर जानता है। वह पहले से ही मसीह में इस मिश्रित-जाति समुदाय का हिस्सा और अभिन्न अंग, पूर्ण भागीदार रहा है। पीटर बेहतर जानता है।

जैसा कि मैंने अभी प्रेरितों के काम 10 और 11 में बताया है, वह कैसरिया जाता है और फिर यरूशलेम में चर्च को जो धर्मशास्त्रीय पाठ सीखा है, उसे वापस बताता है। इसलिए, वे बेहतर जानते हैं, लेकिन वे यरूशलेम चर्च के इन लोगों की उपस्थिति से भयभीत हैं कि वे वास्तव में गैरकानूनी व्यवहार में लिप्त हैं। गैरकानूनी व्यवहार यह है कि ये यहूदी ईसाई, कानून का पालन करने के दायित्व के तहत, कुछ ऐसा कर रहे हैं जो गैरकानूनी हो सकता है लेकिन निश्चित रूप से उल्लंघनकारी लगता है और वास्तव में उन लोगों के साथ संगति कर रहा है जो पापी हैं।

उन्हें इस उलझन से बाहर निकालने के लिए क्या किया जा रहा है? पीटर और बरनबास जैसे यहूदी मसीहियों को इस मुसीबत से बाहर निकालने के लिए क्या किया जा रहा है? यही वह बात है जिसे पॉल गलातियों 2:15 से 21 में शुरू करता है, जहाँ वह पीटर, बरनबास और गलातिया के यहूदी मसीहियों जैसे यहूदी मसीहियों के लिए सुसमाचार के तर्क को सामने लाता है, जो बताता है कि मसीह में परमेश्वर का एक नया परिवार वास्तव में एक दूसरे के साथ पूरी तरह से संगति कैसे कर सकता है। तो, आइए देखें कि यह कैसे सामने आता है। जैसा कि मैंने कहा, यह संभवतः पॉल द्वारा पतरस को दिए गए भाषण का हिस्सा है जो उसने उसे अन्ताकिया में दिया था।

लेकिन भले ही, आप जानते हैं, इसके कुछ हिस्से बिल्कुल वही न हों जो उसने कहा था, यह मूल रूप से धर्मशास्त्र है जिसे पॉल ने पीटर के लिए खोला होगा, और यह उसके लिए मददगार होने वाला है। हालाँकि, इससे पहले कि हम इस पर चर्चा करें, हमें कुछ भारी धर्मशास्त्रीय मुद्दों से निपटना होगा। मुझे कहना चाहिए कि यह पाठ मूल रूप से उन महत्वपूर्ण ग्रंथों में से एक है जिसमें बहुत सारे पॉलिन धर्मशास्त्रीय मुद्दे शामिल हैं जो इन दिनों चर्चा में हैं।

इसलिए, हमें इस परिच्छेद और पॉलिन धर्मशास्त्र में इन प्रमुख व्याख्यात्मक मुद्दों में से कुछ को कवर करना होगा। सबसे पहले, इस पाठ में औचित्य का उल्लेख आता है क्योंकि पॉल, मसीह में यहूदी और गैर-यहूदी रिश्तों की इस समस्या को हल करने के लिए औचित्य का सहारा लेता है। वह इस समस्या को हल करने के लिए औचित्य का उपयोग करता है।

पॉल का औचित्य से क्या तात्पर्य है? खैर, सबसे पहले, औचित्य के बारे में हमें जो पहली बात कहने की ज़रूरत है, वह यह है कि हमारे, खैर, आज बहुत से ईसाई धर्म के लोग औचित्य को हमारे सुधार विरासत से आने वाले उस फैसले के रूप में समझते हैं जो ईश्वर द्वारा दिया जाता है कि एक आस्तिक उस व्यक्ति के धर्मांतरण के बिंदु पर उचित या धर्मी है। यह सच है, बस यह है कि औचित्य के साथ बहुत कुछ चल रहा है। यह एक बड़ी धारणा है, यह एक बड़ी धारणा है।

आपको याद होगा जब मैंने बोर्ड पर यह एक आरेख लगाया था, जहाँ मैं बात कर रहा था, मैंने इस बात का संदर्भ दिया था कि कैसे मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के क्षण में, उद्धार के लिए पहले से ही एक घटक है, लेकिन अभी भी उद्धार के लिए एक घटक नहीं है। औचित्य के बारे में कहने के लिए महत्वपूर्ण बातों में से एक यह है कि औचित्य भी पहले से ही लेकिन अभी तक गतिशील नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि औचित्य, एक अर्थ में, औचित्य एक युगांतिक निर्णय है जिसे परमेश्वर मसीह के दिन अपने लोगों पर पारित करेगा।

ठीक है। औचित्य भविष्य की वास्तविकता है। पॉल गलातियों 5 में कहता है कि हम आत्मा के द्वारा औचित्य या धार्मिकता की आशा की प्रतीक्षा करते हैं क्योंकि यह एक ऐसी धारणा है जो भविष्य में घटित होने वाली है।

अब, जैसा कि होता है, पॉल के धर्मशास्त्र का एक प्रमुख घटक यह है कि मसीह का भविष्य का दिन पहले से ही वर्तमान पर दबाव डाल रहा है और एक अर्थ में, वर्तमान युग में चर्च, विश्वासी और चर्च को पीछे छोड़ दिया है। इसलिए, यदि आप इस बारे में सोचते हैं, तो आप जानते हैं, चर्च उन सभी लोगों के संग्रह के रूप में है जो समय में यहाँ मसीह में हैं, आत्मा द्वारा मसीह का दिन, मसीह का दिन पहले से ही उन सभी के लिए सुरक्षित है जो समय में मसीह में हैं। पॉल कहते हैं कि आप वे लोग हैं जिन पर युगों का अंत आ गया है।

तो, एक अर्थ में जो कोई भी मसीह में है, जो कोई भी मसीह की ओर मुड़ता है और उद्धार प्राप्त करता है, उसे आत्मा द्वारा मसीह में बपतिस्मा दिया जाता है। एक अर्थ में, स्वर्गीय न्यायालय में, धार्मिकता का फैसला सुनाया जाता है, लेकिन यह एक ऐसा फैसला है जिसे कोई नहीं सुनता। यह एक ऐसा फैसला है जो मसीह के भविष्य के दिन की प्रत्याशा में सुनाया जाता है, वह फैसला पूरे ब्रह्मांड के सामने सार्वजनिक रूप से सुनाया जाता है।

तो, औचित्य के बारे में हमें जो कुछ कहना है, उनमें से एक यह है कि यह एक भविष्य की वास्तविकता है जिसे वर्तमान में विश्वासियों पर लागू किया जाता है क्योंकि हम वे लोग हैं जिन पर भविष्य का भार पड़ा है। तो, यह युगांतशास्त्रीय है, यानी, इसका संबंध अंत में होने वाली चीजों से है। धार्मिकता या औचित्य भाषा का एक और पहलू, यह एक ही शब्द समूह है। एक और मुद्दा जो इसका हिस्सा है वह यह है कि औचित्य का संबंध सही होने से है।

इसका सम्बन्ध सुधार से है, अर्थात्, धर्मशास्त्रियों की पिछली पीढ़ियाँ उस औचित्य पर आपत्ति जताती थीं; यह कहना सही नहीं है कि वास्तविकता में इसका कोई प्रभाव नहीं है क्योंकि तब हम इसे केवल एक कानूनी कल्पना बना रहे हैं जो स्वर्ग में सुनाई देती है। लेकिन पॉल के लिए, औचित्य का अर्थ है सुधार करना; अर्थात्, मसीह से बाहर के लोगों को परिवर्तित, परमेश्वर के नए लोगों में लाया जाना। जब हम औचित्यपूर्ण होते हैं, तो यह एक अधिकार है, हम रूपांतरित होते हैं।

तो, औचित्य का परिवर्तनकारी पहलू है। लेकिन इस अनुच्छेद और पौलुस द्वारा अपने तर्क को सामने लाने के तरीके से सबसे अधिक संबंधित पहलुओं में से एक यह है कि औचित्य का संबंध परमेश्वर के लोगों में शामिल होने से भी है। दूसरे शब्दों में, औचित्य का संबंध इस बात से है कि परमेश्वर के लोगों का कौन हिस्सा है।

एक अर्थ में, यह उत्तर देता है कि जब हम प्रभु के भविष्य के दिन की प्रतीक्षा कर रहे हैं, तो लोगों का वह समूह क्या है, वह लोगों का समूह क्या है जिसे परमेश्वर उस दिन पूरी तरह और अंततः न्यायसंगत ठहराएगा। लोगों का वह समूह कैसा दिखता है? पहली सदी में विभिन्न यहूदी समूहों ने उस प्रश्न का अलग-अलग उत्तर दिया होगा। पॉल के सुसमाचार और प्रेरितों के अनुसार, पॉल के सुसमाचार के अनुसार, यह वे सभी लोग हैं जो मसीह में हैं। हर कोई जो मसीह में विश्वास रखता है या जो मसीह की वफ़ादारी का है।

हम इसके बारे में एक सेकंड में बात करेंगे, जो एक और बड़ा व्याख्यात्मक मुद्दा है। लेकिन हर कोई जो यीशु का अनुयायी है, चाहे वे यहूदी हों या गैर-यहूदी, वे लोग हैं जो अंतिम दिन न्यायोचित ठहराए जाएँगे। वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर के लोग कहलाने का अधिकार है और मूल रूप से, जिन्हें अंतिम दिन न्यायोचित ठहराए जाने की आशा का दावा करने का अधिकार है।

यह बात गलातिया की इस स्थिति में थोड़ी सी समझ में आती है क्योंकि यहूदी ईसाई मिशनरियों द्वारा गलातिया में जो तर्क दिया जा रहा है वह यह है कि नहीं, जिन लोगों को अंतिम दिन आशा करने और न्यायोचित ठहराए जाने का अधिकार है वे वे लोग हैं जो मसीह में हैं और यहूदी दिखते हैं। जो लोग यहूदी हैं वे अंतिम दिन न्यायोचित ठहराए जाएँगे। और पॉल कह रहा है कि नहीं, न्यायोचित ठहराए जाने और, इस प्रकार, परमेश्वर के लोगों में शामिल किए जाने का एकमात्र आधार वे लोग हैं जो यीशु मसीह के विश्वास के हैं, जो उसी तरह चलते हैं जैसे यीशु चले थे।

ये वे लोग हैं जो अंतिम दिन न्यायोचित ठहराए जाएँगे। इसलिए, न्यायोचित ठहराना एक जटिल वास्तविकता है, और इसमें बहुत सारे मुद्दे जुड़े हुए हैं। हम देखेंगे कि यह पौलुस के तर्क में कैसे काम करता है, जैसा कि यहाँ आयत 15 से 21 में सामने आता है।

दूसरा मुद्दा, एक व्याख्यात्मक मुद्दा, यह है कि पौलुस इस अभिव्यक्ति से क्या मतलब रखता है, व्यवस्था के कार्य? यह अभिव्यक्ति व्यवस्था का कार्य है जिसे पौलुस ने पद 16 में तीन बार इस्तेमाल किया है। यहीं पर यह संपूर्ण व्याख्यात्मक मुद्दा, जिसे पौलुस पर नया दृष्टिकोण कहा जाता है, सामने आता है। और यहाँ जो हो रहा है वह यह है कि पौलुस के विद्वानों की पिछली पीढ़ियों ने पौलुस के सुसमाचार को यहूदी धर्म की विधिवादी अवधारणा के विरुद्ध खड़े होने के रूप में देखा।

अर्थात्, पौलुस कानून-मुक्त सुसमाचार की घोषणा कर रहा था, जबकि यहूदी धर्म को विधिवादी के रूप में दर्शाया गया है। जब सुसमाचार आता है, तो पौलुस घोषणा करता है कि यह केवल मसीह में विश्वास के द्वारा होता है, न कि कुछ करने या प्राप्त करने या संचय करने या पुण्य कमाने से। और जब पौलुस व्यवस्था के कार्यों की अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, तो यह एक ऐसी अभिव्यक्ति है जिसका संबंध उन कार्यों से है जो मूसा के कानून से जुड़े हैं, जिसके द्वारा कोई व्यक्ति अंतिम दिन पर औचित्य के लिए परमेश्वर के समक्ष दावा प्रस्तुत करने के लिए परमेश्वर के समक्ष पुण्य संचित करता है।

इसलिए, यहाँ गलातियों 2.16 में पौलुस व्यवस्था के कामों के बजाय मसीह में विश्वास की वकालत कर रहा है, जिसका अर्थ है कि वह विधिवाद के कामों से है। हाल ही में, यह तर्क दिया गया है कि पौलुस, इस अभिव्यक्ति व्यवस्था के कामों से, विधिवाद के कामों के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह जिस बारे में बात कर रहा है वह उन प्रकार के कामों के बारे में है जो एक व्यक्ति टोरा या मोजैक कानून के अनुसार करता है।

सब्बाथ का पालन, भोजन तैयार करने में खाद्य नियमों का पालन, खतना जैसे कार्य, ऐसे कार्य जो मूसा के कानून के पालन में अन्य बहुत से कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन ये एक ऐसे जीवन का निर्माण करते हैं जो किसी व्यक्ति को यहूदी बनाता है। इसलिए, पॉल बात नहीं कर रहा है; जब वह कानून के कार्यों का उपयोग करता है, तो वह कानूनवाद के बारे में बात नहीं कर रहा है। वह उन कार्यों के बारे में बात कर रहा है जो एक व्यक्ति कर सकता है जो उसे यहूदी के रूप में चिह्नित करता है या उसे यहूदी के रूप में चिह्नित करता है।

मेरा मानना है कि यहूदी पहचान को बढ़ावा देने वाले कार्य और उस धारणा में बहुत योग्यता है, क्योंकि ये वे चीजें हैं जिनके बारे में पॉल वास्तव में इस संदर्भ में बात कर रहे हैं। वह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच मतभेदों के बारे में बात कर रहे हैं, और पद 15 में, इसी तरह से वह इस चर्चा की शुरुआत करते हैं। हम स्वभाव से यहूदी हैं और अन्यजातियों में से पापी नहीं हैं।

फिर भी, यह जानते हुए कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से धर्मी नहीं ठहराया जाता, व्यवस्था के काम यहूदी पहचान के लिए खड़े होते हैं। पॉल और पीटर यहूदी हैं, लेकिन वे जानते हैं कि यहूदी

पहचान को जोड़ने वाले काम करना धर्मी ठहराए जाने का आधार नहीं है। वे जानते हैं कि धर्मी ठहराए जाने का आधार मसीह में विश्वास है और वह भी अपने आप में।

तो, दूसरी बात, दूसरा व्याख्यात्मक मुद्दा यह है कि कानून के कामों का यहूदी पहचान से संबंध है। इसका यहूदी धर्म के साथ एक कानूनी धर्म के रूप में कोई संबंध नहीं है। तीसरा, तीसरा व्याख्यात्मक मुद्दा, और यह फिर से पेचीदा है, यह है कि मसीह यीशु में विश्वास की यह अभिव्यक्ति पद 16 और उसके बाद थोड़ी अधिक जटिल है जितना आप सोच सकते हैं।

पॉल यहाँ एक यूनानी अभिव्यक्ति का उपयोग करता है जिसे मैं कुछ हद तक हटा दूँगा। पॉल यहाँ एक यूनानी अभिव्यक्ति का उपयोग करता है, पिस्टिस जेसु क्रिस्टो, जिसका अर्थ है, जिसके द्वारा वह संकेत कर रहा है, ठीक है, यहाँ सवाल यह है कि पॉल वास्तव में क्या संकेत दे रहा है? कई अंग्रेजी बाइबल पाठकों के लिए, यह बहुत सीधा लगता है। इस अभिव्यक्ति को समझने के तरीकों में से एक उद्देश्य जननात्मक के रूप में है और इस तरह से अनुवादित किया जा सकता है, जिस तरह से आप शायद इसे देखने के आदी हैं, यीशु मसीह में विश्वास या मसीह यीशु में विश्वास।

हालाँकि, इसका अनुवाद करने का एक और तरीका है, और कई व्याख्याकार तर्क देते हैं कि यह अधिक स्वाभाविक है, यह एक व्यक्तिपरक संबंधकारक है और इसका विश्वास से संबंध है, और यह थोड़ा अस्वाभाविक लग सकता है यदि आप केवल अंग्रेजी अनुवाद में रोमियों और गलातियों को पढ़ने के आदी हैं, तो इसका संबंध यीशु मसीह के विश्वास या मसीह यीशु के विश्वास से है? फिर, सवाल उठता है: यीशु को विश्वास दिखाने की क्या ज़रूरत है? इसके अलावा, पिस्टिस का अनुवाद या अनुवाद वफ़ादारी के रूप में किया जा सकता है, जैसे कि वफ़ादारी, निष्ठा, वफ़ादारी, भरोसा, इस तरह की चीज़। इसलिए, पॉल आंतरिक विश्वास को बाहरी कर्मों के साथ ज़रूरी रूप से अलग नहीं करता है। इस अंतर का संबंध एक तरफ़ यीशु मसीह और यीशु मसीह में उनकी वफ़ादारी या विश्वास से है और दूसरी तरफ़ औचित्य के मामले में यहूदी पहचान से है।

इसलिए, व्याख्याकारों ने इस बात पर बहस की है कि क्या इस अभिव्यक्ति का यीशु मसीह और उनकी वफ़ादारी की एजेंसी से आने वाले औचित्य से कोई लेना-देना है, जो शायद उद्धार में दिव्य पहल पर ज़ोर देती है, या क्या पॉल उद्धार में मानवीय ज़िम्मेदारी और मसीह यीशु में विश्वास करने की मानवीय ज़िम्मेदारी के बारे में बात कर रहे हैं? यह पिछले 30, 40 सालों में पॉलिन धर्मशास्त्र के बड़े व्यवसायों में से एक रहा है। यह एक ऐसा मुद्दा है जो अक्सर नए परिप्रेक्ष्य के मुद्दों से संबंधित होता है, लेकिन यह वास्तव में एक बहुत ही अलग और पृथक मुद्दा है क्योंकि इस बहस के संबंध में रेखाएँ अलग-अलग स्थानों पर आती हैं। मुझे लगता है कि इसका सबसे अच्छा उपचार, या कम से कम उनमें से एक जो मेरी अपनी समझ को पकड़ता है, वह मोर्ने हुकर द्वारा किया गया है, जिन्होंने हाल ही में एक लेख लिखा था जिसमें संकेत दिया गया था कि दोनों पर ज़ोर देने के रूप में इस अभिव्यक्ति को पढ़ने का शायद यह सबसे अच्छा तरीका है।

मेरा मतलब है, शायद पॉल का यहाँ अस्पष्ट होने का मतलब है। कहने का मतलब यह है कि पॉल इस बात पर ज़ोर देने की कोशिश कर रहा है कि औचित्य यीशु मसीह की पिता के प्रति

वफ़ादारी, उनके द्वारा जीए गए जीवन और क्रूस तक वफ़ादार आज्ञाकारिता के उनके मिशन से आता है। यही वह साधन है जिसके द्वारा परमेश्वर औचित्य प्रदान करता है।

इसके अलावा, हम इसे विशेष रूप से तब देखते हैं जब यह श्लोक 20 पर आता है, जहाँ पौलुस अपने जीवन के बारे में बात करता है जो परमेश्वर के पुत्र की वफ़ादारी, या परमेश्वर के पुत्र में विश्वास में लिपटा हुआ है। हालाँकि, आप उस अभिव्यक्ति का अनुवाद करते हैं क्योंकि वही मुद्दा वहाँ भी लागू होता है। लेकिन वहाँ, पौलुस यीशु की वफ़ादारी में मानवीय भागीदारी के बारे में बात करता है। तो, क्या पौलुस का मतलब वास्तव में पिता के प्रति यीशु मसीह की वफ़ादारी और उस तरीके और वफ़ादारी के उस जीवन को एक तरह के टेम्पलेट के रूप में पकड़ना है जिसका हम अनुकरण करते हैं, लेकिन वास्तविकता का वह क्षेत्र भी जिसमें हम कूदते हैं और आत्मा द्वारा बपतिस्मा लेते हैं, और जो हमें साथ ले जाता है जब हम परमेश्वर को वफ़ादारी का जीवन देते हैं, यीशु के वफ़ादारी के जीवन से सशक्त होते हैं, और यीशु के वफ़ादारी के जीवन का अनुकरण करते हैं? मुझे उम्मीद है कि यह समझ में आता है।

मैं एक तरह से दोनों -और दृष्टिकोण अपनाता हूँ, जहाँ इसका सम्बन्ध यीशु मसीह में मेरे सम्मिलित होने के कारण औचित्य से है, और मुझे सहभागी आयाम भी पसंद है जहाँ यीशु मसीह की वफ़ादारी वास्तव में मापदंड निर्धारित करती है और मेरे अपने वफ़ादारी के जीवन के लिए टेम्पलेट है, भले ही मेरा जीवन यीशु के जीवन में लिपटा हुआ हो। तो, ये तीन व्याख्यात्मक मुद्दे कई बिंदुओं पर सामने आने वाले हैं क्योंकि हम गलातियों 2:15-21 के माध्यम से आगे बढ़ते हैं, और गलातियों 2:15-21 वास्तव में इस पत्र का धार्मिक हृदय है और यह वह धार्मिक केंद्र है जो वह अपने श्रोताओं को संप्रेषित करना चाहता है। तो, किसी को खोए बिना कुछ हद तक इसे कवर करने के बाद, आइए पाठ में वापस आते हैं।

इस अनुच्छेद में पौलुस की रणनीति यह है कि गलातिया में यहूदी मसीहियों और पतरस और बरनबास को एक ही गलती करते हुए एक साथ रखा जाए। और इसलिए, 2:15-21 में पौलुस का धार्मिक संदेश वही है जो वह उन सभी को कहना चाहता है। आइए देखें कि उसका तर्क कैसे काम करता है।

पद 15 और 16 में, पॉल सहमत धारणाओं से शुरू होता है जिसे पॉल, पीटर, बरनबास और हम मान लेंगे कि गलातिया के यहूदी ईसाई सभी साझा करते हैं। वे ये साझा करते हैं... पद 15 और 16 मूल रूप से पॉल के युग के यहूदी ईसाइयों की आम स्वीकारोक्ति है। और यहाँ वह क्या कहता है: हम स्वभाव से यहूदी हैं।

यानी, आप, पतरस, और बरनबास, और मैं, पॉल, मैं, पॉल, हम स्वभाव से, जन्म से यहूदी हैं, और अन्यजातियों में से पापी नहीं हैं। और जब पॉल ऐसा कहता है, तो एक तरह से वह थोड़ा अप्रिय हो जाता है। वह यहाँ मौजूद सभी अंतर्निहित धारणाओं को सामने ला रहा है और उन्हें स्पष्ट कर रहा है।

और वह वास्तव में थोड़ा नस्लीय रूप से आरोपित है क्योंकि जिस तरह से पहली सदी के यहूदी अन्यजातियों को देखते थे, वह उन्हें स्वाभाविक रूप से अशुद्ध, स्वाभाविक रूप से पापी के रूप



में देखना था। और उनके साथ यह संगति पॉल या पीटर जैसे यहूदी को अशुद्ध बनाती है। तो, मेरा मतलब है, यह, आप जानते हैं, वे अन्यजातियों के पापियों को न्याय में नीची नज़र से देखते हैं।

इसलिए, पौलुस कह रहा है, तुम, पतरस और मैं, हम स्वभाव से यहूदी हैं और अन्यजातियों में से पापी नहीं हैं। फिर भी, या लेकिन, या फिर भी, यह जानते हुए कि कोई व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं, बल्कि मसीह यीशु में विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराया जाता है, यानी, भले ही तुम और मैं जन्म से यहूदी हैं और अन्यजाति पापी नहीं हैं, हम जानते हैं, पतरस, कि परमेश्वर के लोगों में शामिल होने का आधार या आधार या परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने का आधार हमारी यहूदी पहचान नहीं है, बल्कि यीशु मसीह की वफ़ादारी या मसीह में हमारे लिए परमेश्वर का प्रावधान है, ऐसा कुछ। इसलिए, यहाँ पद 16 की पहली दो पंक्तियों में वह जो करने की कोशिश कर रहा है, वह यह है कि वह पतरस से कहना चाहता है कि भले ही हम अन्यजाति पापी नहीं हैं और हम यहूदी हैं, फिर भी हम जानते हैं कि यह हमारा यहूदीपन नहीं है जो हमें बचाता है।

यह हमारा यहूदी होना नहीं है जो हमें न्यायोचित ठहराता है। यह मसीह की अपनी वफ़ादारी में हमारा समावेश है, या यदि आप चाहें, तो यह मसीह में हमारा विश्वास है, हमारा यहूदी होना नहीं। इस कारण से, हमने मसीह यीशु में भी विश्वास किया है, ताकि हम मसीह की वफ़ादारी, या मसीह में विश्वास के द्वारा न्यायोचित ठहराए जाएँ, न कि यहूदी होने के द्वारा।

तो, वह खुद को दोहरा रहा है। वह यहाँ तर्क पर विस्तार से बता रहा है ताकि पीटर को वास्तव में समझ में आ जाए। मैं इसे संक्षेप में कहूँगा।

हमने भी मसीह पर विश्वास किया है या खुद को मसीह के प्रति समर्पित किया है ताकि हम मसीह की वफ़ादारी के आधार पर परमेश्वर के लोगों में शामिल हो सकें, न कि हमारी यहूदी पहचान के कारण, क्योंकि सिर्फ़ यहूदी पहचान बनाए रखने से औचित्य नहीं मिलता। अब तक, यह आयत 15 और 16 का तर्क है, और पौलुस जो कर रहा है वह तर्क को दर्दनाक रूप से लंबा खींचना और यहूदी ईसाई धर्म, सुसमाचार को यहूदी ईसाइयों के रूप में उजागर करना है: पतरस, बरनबास, और खुद, और गलातिया के यहूदी ईसाई।

और अब तक मुद्दा यह है। परमेश्वर के सामने औचित्य के संबंध में यहूदी, अन्यजातियों के समान ही आधार पर हैं। परमेश्वर के सामने औचित्य के संबंध में यहूदी, अन्यजातियों के समान ही आधार पर हैं।

धर्मशास्त्रीय दृष्टि से, हम शांत हैं, लेकिन देखिए पौलुस पतरस के साथ क्या करता है। फिर पौलुस पतरस की कठिनाई को अलग करके स्पष्ट करता है, जो बरनबास की कठिनाई के समान ही है, यरूशलेम के मसीहियों की कठिनाई के समान ही है, और गलातिया के आंदोलनकारियों की कठिनाई के समान ही है। और यहाँ यह श्लोक 17 में है।

यदि मसीह में धर्मी ठहराए जाने की कोशिश करते हुए, हम स्वयं भी पापी पाए गए हैं, तो क्या मसीह पाप का सेवक है? या मैं इसे इस तरह से व्यक्त कर सकता हूँ। यदि हम धर्मी ठहराए जाने के लिए परमेश्वर के सामने बाकी मानवता के बगल में खुद को रखते हैं, तो क्या मसीह पाप के

लिए कुछ काम कर रहा है, पाप की ब्रह्मांडीय शक्ति? कहने का तात्पर्य यह है कि, याद रखें कि आयत 15 और 16 का तर्क क्या है। परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाने के मामले में यहूदी अन्यजातियों के समान ही हैं।

तो, ये गैर-यहूदी ईसाई और ये यहूदी ईसाई, पौलुस पतरस से कह रहा होगा, यीशु ने हमारे लिए जो किया, वही वह चीज़ है जिससे तुम डरते हो। और तुम पापियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने से डरते हो, जो तुम्हें अशुद्ध बनाता है। यह अच्छी बात नहीं है।

खैर, यीशु, मसीह में परमेश्वर, ने हमारे साथ ऐसा इसलिए किया क्योंकि उसने हमें उन सभी गैर-यहूदी पापियों के बगल में खड़ा किया जिन्हें परमेश्वर के सामने औचित्य की आवश्यकता है। इसलिए, हम अन्य गैर-यहूदी ईसाइयों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं जिन्हें हमें पापी मानने के लिए कहा जा रहा है। तो, क्या यीशु पाप के साथ गठबंधन में है? यही पहली है।

यही धर्मशास्त्रीय समस्या है। और, बेशक, पॉल कहते हैं, ऐसा कभी न हो। यह एक बेतुका निष्कर्ष है।

यह एक बेतुका निष्कर्ष है। लेकिन वास्तव में यही तर्क है कि पतरस और बरनबास और यरूशलेम के ईसाई और गैर-यहूदी, गलातिया के आंदोलनकारी, इसी निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। और पॉल चाहता है कि वे देखें कि यह बेतुका है।

कुछ और चल रहा है। इसलिए, उन्हें उस समस्या से बाहर निकालने के लिए, पॉल इस धार्मिक तर्क को सामने लाता है, और वह इसे दो विस्तारों के साथ सामने लाने जा रहा है। एक श्लोक 18 में और फिर एक श्लोक 19 और 20 में।

और वे दोनों इनसे शुरू होते हैं, जैसा कि मैंने पहले कहा, ये शानदार संयोजन। दो चार हैं; क्षमा करें, ये दो चार हैं जो पॉल के दो विस्तारों को शुरू करते हैं। पहला जो उसने यहाँ दिया है वह श्लोक 18 में है, और यह बहुत ही गूढ़ है।

बहुत, बहुत गूढ़। और जब भी कोई चीज़ मेरे लिए जटिल होती है, तो मुझे उसे चित्रित करना पड़ता है। तो, मैं देखूंगा कि क्या मैं यहाँ इस तर्क को चित्रित कर सकता हूँ।

पौलुस ने श्लोक 18 में यह कहा है, क्योंकि, इसका मतलब है, यही कारण है कि यह कोई समस्या नहीं है, पतरस। अगर मैं वह सब फिर से बनाऊँ जिसे मैंने एक बार नष्ट कर दिया था, तो मैं खुद को अपराधी साबित करूँगा। पौलुस क्या कह रहा है? अगर मैं वह सब फिर से बनाऊँ जिसे मैंने एक बार नष्ट कर दिया था, तो मैं खुद को अपराधी साबित करूँगा।

और यहाँ पद 18 में पौलुस जो कर रहा है, वह यह है कि वह चाहता है कि पतरस समझे, और साथ ही आंदोलनकारी, गलातिया के शिक्षक, वह चाहता है कि वे समझें कि वे जो कर रहे हैं, गैर-यहूदी पापियों के साथ संगति करने और इस तरह अशुद्ध होने के डर से प्रेरित होकर, वे जो कर रहे हैं, उस डर से प्रेरित होकर, वे परमेश्वर के सामने उससे कहीं अधिक अनिश्चित स्थिति में हैं, जिससे वे बचने के बारे में सोचते हैं। यहाँ मेरा मतलब है। मैं पद 18 को इस तरह से समझा

सकता हूँ: यदि आप, पतरस, आंदोलनकारी, यरूशलेम के ईसाई यदि आप वास्तव में अपने यहूदी ईसाई धर्म को उसी तरह से निभाते हैं जिस तरह से आप कर रहे हैं, तो आप एक पापी से भी बदतर हो जाते हैं; आप एक अपराधी बन जाते हैं।

आप परमेश्वर के विरुद्ध एक अत्याचारी पापी बन जाते हैं। अब, यह कैसे होता है? यहाँ बताया गया है कि यह कैसे होता है। पौलुस उस चीज़ को फिर से बनाने की बात करता है जिसे उसने एक बार नष्ट कर दिया था।

और मुझे लगता है कि पॉल यहाँ जो कर रहा है, वह यह है कि वह, ठीक है, मुझे नहीं पता कि मैं कानून के बारे में कहना चाहता हूँ या नहीं, क्योंकि कानून ने यह नहीं सिखाया, लेकिन पॉल ने जो समझा है वह वैध या अवैध है, वह है अन्यजातियों के साथ संगति करना। और यही वह है जिसके बारे में पतरस ने प्रेरितों के काम 10 और 11 में बात की थी। यानी, यहूदियों के रूप में अन्यजातियों के साथ संगति करना अवैध है।

आप कानून के बारे में उनकी समझ को एक किले के रूप में देख सकते हैं। वास्तव में, शायद मैं इसे उद्धरण चिह्नों में रखूँगा: कानून, क्योंकि मूसा का कानून वास्तव में ऐसा नहीं करता था, लेकिन पीटर और पॉल ने औपचारिक रूप से सोचा था कि यह ऐसा करता है। कानून एक तरह से किले के रूप में काम कर रहा था, उन्हें अंदर रखता था।

गैर-यहूदी पापी यहाँ बाहर हैं। अब, पॉल, जो पहले यहाँ था, कानून के अंतर्गत, गैर-यहूदी पापियों के साथ संपर्क से बचता हुआ, मूल रूप से किले के भीतर रह रहा है, अपनी पवित्रता बनाए रख रहा है। उसने मसीह में जो महसूस किया वह यह है कि मसीह ने यहूदियों और गैर-यहूदियों के बीच की इन बाधाओं को तोड़ दिया है।

और इसलिए, मसीह कहाँ स्थित है? एक अर्थ में मसीह यहाँ स्थित है। वह मसीह में एक नया परिवार बना रहा है जो बहु-जातीय और बहु-राष्ट्रीय है। यह एक समस्या है यदि आप किले के भीतर फंस गए हैं क्योंकि मसीह इन सीमाओं को तोड़ रहा है।

वास्तव में, हम शायद क्रॉस को पूरी तरह से बाहर रख सकते हैं क्योंकि पॉल ने जो किया है वह यह है कि उसने इस किले को तोड़ दिया है ताकि वह यहाँ बाहर आ सके जहाँ यीशु है। पतरस ने भी उस अवरोध को तोड़ दिया है। याद रखें, हमारे पास प्रेरितों के काम 10 और 11 में वह प्रकरण था।

और साथ ही, वह अन्ताकिया आया है, और वह अन्यजातियों के साथ भोजन कर रहा है। इसलिए, वह वहाँ चला गया है जहाँ यीशु है, वहाँ अन्यजातियों के पापियों के बीच, जहाँ मसीह में यहूदी भी हैं, क्योंकि वहाँ बाहर रहना कोई समस्या नहीं है। मसीह में यहूदी, अन्यजाति पापी, सभी एक बड़ा खुशहाल परिवार हैं।

अब, पतरस और यहूदी मसीहियों को जिस बात का डर है, वह यह है कि वे इन गैर-यहूदी पापियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर नहीं चलना चाहते। इससे वे अशुद्ध हो जाएँगे। इसलिए, वे किले के भीतर रह रहे हैं और पौलुस कह रहा है, इससे तुम्हारे लिए और भी बुरा होगा।

यह आपको अपराधी बनाता है। यह आपको अपराधी क्यों बनाता है? इसका कारण यह है। पौलुस कह रहा है, यदि मैं अब यहाँ से बाहर गया हूँ, जो मैंने किया, पतरस, तो मैं अन्यजातियों के साथ भोजन कर रहा हूँ।

तुमने भी ऐसा ही किया, पतरस। तुम गैर-यहूदियों के साथ खाना खा रहे थे। अगर मैं यह समझकर यहाँ आया हूँ कि इसे तोड़ा जा सकता है, जो मुझे इन सीमाओं के भीतर रखता है उसे तोड़ा जा सकता है ताकि मैं वहाँ रह सकूँ जहाँ मसीह पापियों के बीच है, उन लोगों के बीच जिन्हें मैं पापी समझता था।

अगर मैंने उसे तोड़ दिया और फिर से बनाया, तो मैं अपराधी हूँ क्योंकि मैं यही कर रहा हूँ। मैं पहले से ही यहाँ हूँ। यह मैं और तुम हो, पीटर।

यह मैं और तुम हो। अगर मैं अब कहता हूँ, यहाँ से बाहर की स्थिति से, यह आवश्यक है। अगर मैं अब कहता हूँ कि मसीह के सामने न्यायोचित होने के लिए किले के भीतर रहना आवश्यक है, तो ठीक है, मैं पहले से ही बाहर हूँ। तो, मैं क्या कर रहा हूँ, और यही वह है जो पॉल पीटर को समझाना चाहता है, पीटर, आप दो परस्पर विरोधी स्थितियों को पकड़ रहे हैं।

आप अपने जीवन से कह रहे हैं कि आपको गैर-यहूदियों के साथ बाहर रहना चाहिए, और आप कह रहे हैं कि आप गैर-यहूदियों के साथ बाहर नहीं रह सकते। आप कह रहे हैं कि आपको अंदर रहना है, और आप पहले ही इसे छोड़ चुके हैं। तो, आप मूल रूप से खुद को पापी नहीं बल्कि कानून का उल्लंघन करने वाला बताते हैं।

कोई व्यक्ति जो जानबूझकर कानून की शिक्षाओं की सीमा को लांघता है, वह अपराधी बन जाता है। तो, आप मूल रूप से कह रहे हैं कि उद्धार केवल उन लोगों में है जो यहूदी पहचान में भाग लेते हैं और यह उन लोगों में है जो गैर-यहूदियों के बीच भाग लेते हैं। आप दोनों तरह से नहीं हो सकते।

यह परस्पर असंगत है। यही श्लोक 18 का तर्क है। पीटर, मैं जानता हूँ कि तुम पापी बनने से बचने की कोशिश कर रहे हो।

यदि आप वापस जाते हैं और आप अन्यजातियों के साथ संगति से दूर हो जाते हैं, यदि आप ऐसा करते हैं, तो आप वास्तव में एक अपराधी हैं। तो, यह उनका पहला तर्क है। उनका पहला तर्क बस यह कहने का एक तरीका है, वास्तव में, यदि आप जो करते हैं वह बहुत बुरा है, पीटर।

फिर, आयत 19 से 20 में, पॉल इस तर्क की व्याख्या करने जा रहा है कि वह वास्तव में पापियों के साथ संगति क्यों कर सकता है, और यह कोई बड़ी बात नहीं है। वह इस पूरे मार्ग में चल रही हर चीज के अंतर्निहित तर्क को समझाने जा रहा है, जहाँ वह आयत 18 में कहता है, दूसरी व्याख्या चार से शुरू होती है, क्योंकि व्यवस्था के माध्यम से, मैं व्यवस्था के लिए मर गया ताकि मैं परमेश्वर के लिए जी सकूँ। वह वहाँ क्या कह रहा है? मुझे लगता है कि पॉल अभी भी उसी धारणा के साथ

काम कर रहा है, व्यवस्था की यह धारणा एक किले के रूप में है जो किसी भी व्यक्ति की मृत्यु की मांग करती है जो उल्लंघन करता है।

पुराने नियम में कानून की सीमाओं का जानबूझकर उल्लंघन करने और रोज़मर्रा के पापों के बीच अंतर है, जिनका प्रायश्चित किया जा सकता है। लेकिन, कानून के अनुसार उल्लंघन करने वालों की मृत्यु आवश्यक है। यह मूल रूप से एक किला है, और इससे बाहर निकलने का एकमात्र तरीका मृत्यु है।

तो, पॉल कह रहा है कि व्यवस्था के उस तंत्र के माध्यम से, व्यवस्था के माध्यम से, व्यवस्था के अपने तंत्र के माध्यम से, मैं वास्तव में व्यवस्था के लिए मर गया। वह आगे बताता है कि श्लोक 20 में, वह पहले ही मर चुका है क्योंकि उसे मसीह के साथ सह-कूस पर चढ़ाया गया है। वह मर चुका है, और वह मसीह के साथ मर गया।

इसलिए, वह उस पुरानी दुनिया के लिए मर गया, और वह यहूदी धर्म के उस संस्करण के लिए भी मर गया जो इस किले को छोड़कर गैर-यहूदी पापियों के साथ संगति करना गैरकानूनी मानता है। इसलिए, पॉल के लिए, वह धर्मशास्त्र जो उसे यहाँ लाता है, पापियों के साथ संगति, मसीह के साथ सह-कूस पर चढ़ाया जाना है। आप पॉल का नाम वहाँ रख सकते हैं।

उसे किसी भी सीमा का उल्लंघन करने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है, और उसे पापियों के साथ संगति करने की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि वह मर चुका है। इसलिए, वह अब इस वास्तविकता का पालन नहीं करता है, जो उन्हें उनका लेबल देता है, और वह अब इसके भीतर रहने के लिए बाध्य नहीं है। यह, संक्षेप में पद 19 पर वापस जाने पर, उसे वास्तव में परमेश्वर के लिए जीने की अनुमति देता है क्योंकि परमेश्वर वर्तमान में जो कर रहा है वह इस बहु-राष्ट्रीय, बहु-जातीय समुदाय, इस बहु-जातीय परिवार का निर्माण कर रहा है, और इसमें पौलुस की पूर्ण भागीदारी उसका परमेश्वर के लिए जीवित होना है।

और यह व्यवस्था का अपना तंत्र है जिसने उसे मसीह में और उसके साथ सह-कूस पर चढ़ने के आधार पर ऐसा करने की अनुमति दी। इसलिए, मसीह की मृत्यु में पौलुस के शामिल होने के आधार पर, वह उस विशिष्ट किले से बाहर निकलकर एक ऐसे स्थान पर पहुँचता है जहाँ वह अब अन्यजातियों के साथ पूरी तरह से भाग ले सकता है। तो, आइए यहाँ पद 20 के शेष भाग को देखें।

मैं मसीह के साथ कूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं हूँ। कहने का तात्पर्य यह है कि अब वह पॉल और उसकी सभी उपलब्धियाँ और सामाजिक स्थिति नहीं है जो उसने टोरा-आधारित संस्कृति में बनाई थी। वह व्यक्ति मर चुका है।

अब मैं नहीं जीता, बल्कि मसीह मुझमें और मेरे शरीर में जीता है; मैं अपने साथियों के बीच सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए यहूदी संस्कृति में रहकर नहीं जीता हूँ। मैं अब परमेश्वर के पुत्र की वफ़ादारी से जीता हूँ, जो स्वयं यीशु द्वारा सशक्त है। मैं परमेश्वर के पुत्र में विश्वास से जीता हूँ, जिसने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए खुद को समर्पित कर दिया।

इसलिए, पॉल अब दबाव का जीवन नहीं जीता। वह अब इन सीमाओं को बनाए रखने का जीवन नहीं जीता। उसने अब इसे छोड़ दिया है, और वह ऐसा जीवन जीता है जो यीशु के आत्म-त्याग वाले प्रेम के जीवन का अनुकरण करता है और, वास्तव में आत्म-त्याग वाले प्रेम का, वे दो तत्व, जिन्होंने मुझसे प्रेम किया और मेरे लिए खुद को समर्पित कर दिया।

और यह कि हमसे प्रेम करना और हमारे लिए खुद को समर्पित करना पॉल के लिए दूसरों से प्रेम करने और उनके लिए खुद को समर्पित करने का जीवन जीने का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि यह तर्क समझ में आता है। इसका मतलब यह है कि पॉल यहाँ जो तर्क दे रहा है, वह समझ में आता है।

वह इस किलेनुमा संरचना से बाहर कैसे निकलेगा, यह मरने से ही संभव है, क्योंकि इसे छोड़ने के लिए मृत्यु की आवश्यकता होती है। यदि वह पहले ही मर चुका है, तो चिंता की कोई बात नहीं है। इस तरह के परिदृश्य में वापस जाने पर हम वर्तमान बुरे युग की कल्पना कर सकते हैं।

यह बहिष्कार का क्षेत्र है। यह पापियों को बाहर धकेलने का क्षेत्र है। यह दूसरों से बेहतर के रूप में अपनी पहचान स्थापित करने का क्षेत्र है।

इसलिए, पापियों की पहचान करना, दूसरों को पापी के रूप में पहचानना, दूषित या बुरा या बेकार या अपेक्षाकृत बेकार के रूप में पहचानना। ये सभी व्यवहार, दृष्टिकोण, कार्य और सामाजिक गतिशीलता हैं जो एक भ्रष्ट ब्रह्मांडीय क्षेत्र, वर्तमान बुरे युग से आते हैं। और मसीह की मृत्यु के कारण, हम नई सृष्टि में पहुँच जाते हैं, जो प्रेम, आत्म-समर्पण और समावेश द्वारा उन्मुख, स्वयं मसीह के चरित्र को अपनाती है।

तो, अमीर, गरीब, पुरुष, महिला, यहूदी, यूनानी। मेरा मतलब है, मसीह में समावेशी दृष्टिकोण और व्यवहार का यह मौलिक आयाम है। इसलिए, पॉल के दृष्टिकोण से, यहूदी ईसाई गैर-यहूदी ईसाइयों को नहीं देखते हैं और उन्हें पापी या किसी भी चीज़ से कम मूल्यवान नहीं मानते हैं।

हम खुद को उस नए परिवार में भाई-बहन के रूप में देखते हैं जिसे परमेश्वर मसीह में बना रहा है - अब दूसरों को अलग-थलग नहीं करना है। अब, किसी तरह, उस गतिशीलता को याद न करें जिसके द्वारा पौलुस यहूदी धर्म के शुद्धिकरण के लिए काम करने की कोशिश कर रहा था।

अब, एक क्रांतिकारी बदलाव आ रहा है, इसलिए जो लोग पहले खतरनाक माने जाते थे, वे अब दोस्त बन गए हैं। इसलिए, यह एक अलग तरह की जीवन शैली और सामुदायिक जीवन शैली है। यह वास्तव में पुनरुत्थान का क्षेत्र है।

और यही वह क्षेत्र है जो, पॉल के धर्मशास्त्र के अनुसार, भविष्य में अंततः परमेश्वर का राज्य बन जाएगा। यही वह क्षेत्र है जो विनाश की ओर जा रहा है और टूट रहा है और अंततः मसीह के दिन नष्ट हो जाएगा। और इसलिए, जैसा कि मैंने कहा, यही वह क्षेत्र है जो नई सृष्टि की ओर बढ़ने वाला है।

इससे हमें पद 21 का अर्थ समझने में मदद मिलती है क्योंकि यह सुधार और औचित्य का क्षेत्र है। यह सही किया गया क्षेत्र है, परमेश्वर के सामने न्यायोचित होने का क्षेत्र, जो पद 21 का अर्थ समझने में मदद करता है जब पौलुस कहता है, मैं परमेश्वर के अनुग्रह को व्यर्थ नहीं करता। क्योंकि यदि धार्मिकता व्यवस्था के द्वारा आती है, तो मसीह व्यर्थ ही मरा।

और मुझे लगता है कि पॉल जो कहना चाह रहा है, वह यह है कि वह ईश्वर की कृपा को निष्फल नहीं कर रहा है। वास्तव में, किसी अन्य तरीके से इस वास्तविकता, नई सृष्टि, सुधार के क्षेत्र को वास्तव में उत्पन्न करने में सक्षम होने के रूप में देखना, यदि कोई अन्य तरीका इसे उत्पन्न कर सकता है, तो यह दावा होगा कि ईश्वर की कृपा किसी अन्य तरीके से काम कर रही है। पॉल ईश्वर की कृपा को निष्फल नहीं कर रहा है।

वह वास्तव में कह रहा है कि केवल क्रूस ही इसे लाया है। केवल मसीह में विश्वास ही इसमें भाग लेने में सक्षम बनाता है। यदि यह कानून द्वारा, यहूदी पहचान द्वारा लाया गया था, या यदि आप एक यहूदी होने के नाते इसमें भाग ले सकते थे, तो मसीह को मरने के लिए भेजने के लिए भगवान बेहद क्रूर थे क्योंकि यह किसी और तरीके से किया जा सकता था।

इस नई सृष्टि की वास्तविकता को बनाने का एकमात्र तरीका क्रूस है। और इसमें भाग लेने का एकमात्र तरीका मसीह में विश्वास करना है। इसलिए, पॉल वास्तव में कुछ सकारात्मक कहने का एक तरीका है। नकारात्मक कहने से, मैं ईश्वर की कृपा को नकार नहीं रहा हूँ।

पॉल वास्तव में परमेश्वर के अनुग्रह की घोषणा कर रहा है। परमेश्वर की शक्ति इसी तरह काम करती है। यह किसी सांसारिक, सांसारिक एजेंडे से काम नहीं करती।

एक अंतिम टिप्पणी जो मैं करना चाहूँगा, और वह एक तरह से आध्यात्मिक जीवन, एक आध्यात्मिक आत्म-सम्मान की धारणा है। जब पॉल कहते हैं, मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं हूँ, बल्कि मसीह मुझमें रहता है। कृपया इसे जॉन बैपटिस्ट की झूठी आध्यात्मिकता के संदर्भ में न सोचें।

मैंने बहुत से लोगों को यह कथन कहते सुना है, और फिर जॉन द बैपटिस्ट का कथन भी, मुझे घटाना चाहिए, उसे बढ़ाना चाहिए। कृपया समझें कि जॉन द बैपटिस्ट एक क्रम के बारे में बात कर रहे हैं। परमेश्वर के छुटकारे के कार्य के मंच पर उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

अब, उसके लिए एक कदम पीछे हटने का समय आ गया है। लेकिन यह ऐसा कथन नहीं है जो हर किसी की आध्यात्मिकता को नियंत्रित करे। जब पॉल यहाँ कहता है, मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूँ, और अब मैं जीवित नहीं हूँ, बल्कि मसीह मुझमें जीवित है।

ऐसा नहीं है कि मुझे, एक व्यक्ति के रूप में, कम होना चाहिए ताकि मसीह को बड़ा किया जा सके। पॉल यहाँ एक गलत तरीके से निर्मित आत्म और जो मैंने सोचा था कि मैं था, के बीच एक अंतर बना रहा है। मैंने जो सोचा था कि मैं था और मेरी संस्कृति ने मुझे बताया कि मैं कौन था।

मैं जो सोचता था कि मैं हूँ, और जो मैं अपने साथियों के सम्मान में हूँ। वह आत्म मर चुका है। वह आत्म जिसने दूसरों को अलग-थलग कर दिया, वह आत्म जिसने दूसरों के साथ बुरा व्यवहार किया, वह आत्म जिसने दूसरों पर दबाव डाला, वह आत्म जिसने दूसरों पर अधिकार करने की कोशिश की, वह आत्म मर चुका है।

यह क्रूस पर है। और ऐसा नहीं है कि मैं समाप्त हो गया हूँ और मसीह ने बस कार्यभार संभाल लिया है। मसीह के मुझमें होने और आत्मा द्वारा मसीह में समाहित होने के कारण, मैं वह बन गया जो मैं अंततः हूँ।

मैं अपना सच्चा स्वरूप बन जाता हूँ। इसलिए, मसीह मुझमें रहता है, मैं परमेश्वर के पुत्र की वफ़ादारी में लीन हो जाता हूँ, और मुझे वह बनाता है जो मैं अंततः और पूरी तरह से हूँ। और मेरा मतलब यह है।

अब मैं सोच सकता हूँ, क्योंकि मैं मसीह में स्वतंत्र हूँ और पूरी तरह से प्यार किया जाता हूँ, मैं वास्तव में अपने सभी कौशल और क्षमताओं के बारे में सोच सकता हूँ और वास्तव में ईमानदार हो सकता हूँ। क्योंकि मैं इस बारे में सोच सकता हूँ कि मैं समुदाय में क्या योगदान देता हूँ। मैं अपना समय कहाँ अधिकतम कर सकता हूँ? मैं किसमें इतना अच्छा नहीं हूँ? मुझे दूसरों की कहाँ ज़रूरत है? मैं इसके बारे में पूरी तरह से ईमानदार हो सकता हूँ क्योंकि उनमें से कोई भी व्यवहार, मेरे चर्च में मेरे द्वारा ग्रहण किए जाने वाले कोई भी पद, इनमें से कोई भी मेरा मूल्य निर्धारित नहीं करता है। मैं मसीह में पूरी तरह से प्यार किया जाता हूँ।

यहाँ, एक भ्रष्ट अवधारणा के अनुसार, मुझे शिक्षक बनना होगा, मुझे नेता बनना होगा, मुझे निर्देशक बनना होगा, मुझे प्रभारी व्यक्ति बनना होगा, जो भी हो क्योंकि तब मैं अधिक मूल्यवान हूँ। वह एक ऐसी दुनिया है जो अब मर चुकी है। और मैं अनुयायी हो सकता हूँ, मैं भागीदार हो सकता हूँ।

मैं कभी-कभी किसी चीज़ का निर्देशन कर सकता हूँ, लेकिन मैं ऐसा व्यक्ति भी हो सकता हूँ जो आदेश मानता हो। इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता क्योंकि मैं उन लोगों में से एक हूँ जिन्हें मसीह में पूरी तरह से प्यार किया जाता है। मैं वह बन जाता हूँ जो मैं आखिरकार हूँ।

मैं अपनी शादी में वही बन जाती हूँ जो मैं सच में हूँ। मुझे अपनी ज़मीन के लिए लड़ना नहीं पड़ता। मैं सुन सकती हूँ।

हम घर में ऐसी भूमिकाएँ रख सकते हैं जो कार्यक्षमता के मामले में हम सभी के लिए सबसे बेहतर होने के आधार पर बदलती रहती हैं। यह जानते हुए कि मैं जितना अधिक सेवक बनूँगा, जितना अधिक ग्रहण करूँगा, जितना अधिक सुनूँगा, जितना अधिक आत्म-समर्पण प्रेम में संलग्न रहूँगा, उतना ही अधिक ये व्यवहार मेरे घर में पुनरुत्थान की उपस्थिति उत्पन्न करेंगे। मैंने इस बारे में बहुत सोचा है कि संकाय में कैसे भाग लिया जाए, जहाँ कभी-कभी ज़मीनी युद्ध छिड़ जाता है।



लेकिन ईसाई पहचान और मैं जो वास्तव में और पूरी तरह से हूँ, वह बनना जीवन के कई क्षेत्रों में बहुत सारी आशा और बहुत सारी प्रतिज्ञा प्रदान करता है। जब हम अपनी बातचीत में, अपने संबंधों की गतिशीलता में, दूसरों के प्रति अपने रुख में, और एक समुदाय के रूप में, व्यापक संस्कृति के लिए चर्च द्वारा अपनाए जाने वाले रुख के संबंध में क्रॉस का आकार लेने के बारे में सोचते हैं, तो हम ईश्वर के प्रेम को प्रसारित करना शुरू कर देते हैं और ईश्वर की उपस्थिति का अधिक आनंद लेते हैं। लेकिन इसका मतलब आमतौर पर सत्ता छोड़ना, सत्ता की चाहत और जबरदस्ती और सत्ता हथियाना छोड़ना और आतिथ्य सेवा और आत्म-त्याग प्रेम की मुद्राएँ अपनाना होता है।

तो, बस इतना कहना है कि जब ईसाई व्यवहार को अपनाने के बारे में सोचने की बात आती है, तो हम खुद को खत्म नहीं कर रहे हैं और यीशु को प्रदर्शन पर नहीं आने दे रहे हैं। हम खुद के बारे में गलत धारणाओं को खत्म कर रहे हैं और यह निर्धारित कर रहे हैं कि पॉल की तरह, मेरा शरीर, मेरे सामाजिक संबंध, मेरा शरीर यीशु को प्रकट करने वाला स्थान कैसे बन सकता है? और इसका मतलब है कि मैं वह बन जाऊँ जो मैं वास्तव में और पूरी तरह से हूँ। और यह इस बात को समझाने की दिशा में थोड़ा आगे जाता है कि ईसाई स्वतंत्रता और आज़ादी को पूरी तरह से कैसे आबाद किया जा सकता है, क्योंकि यह वास्तव में एक मुक्त वास्तविकता है।

इसलिए, पॉल ने पतरस और गलातिया में मौजूद यहूदी ईसाइयों के लिए जो धार्मिक तर्क प्रस्तुत किया है, उसका संबंध मसीह की मृत्यु में रहने से है और यह कैसे एक नए संसार का निर्माण करता है, जहाँ परमेश्वर मसीह में सभी जातियों से बने अपने बहुराष्ट्रीय लोगों का निर्माण कर रहा है - यह उस पत्र का सार है जिसे हम गलातियों के शेष भाग में काम करते हुए देखेंगे।

यह डॉ. टिम गाम्बस द्वारा गलातियों की पुस्तक पर उनके शिक्षण में है। यह गलातियों 2:11-21 पर सत्र 4 है।